कर्मकाण्डसंस्कारविज्ञानम्

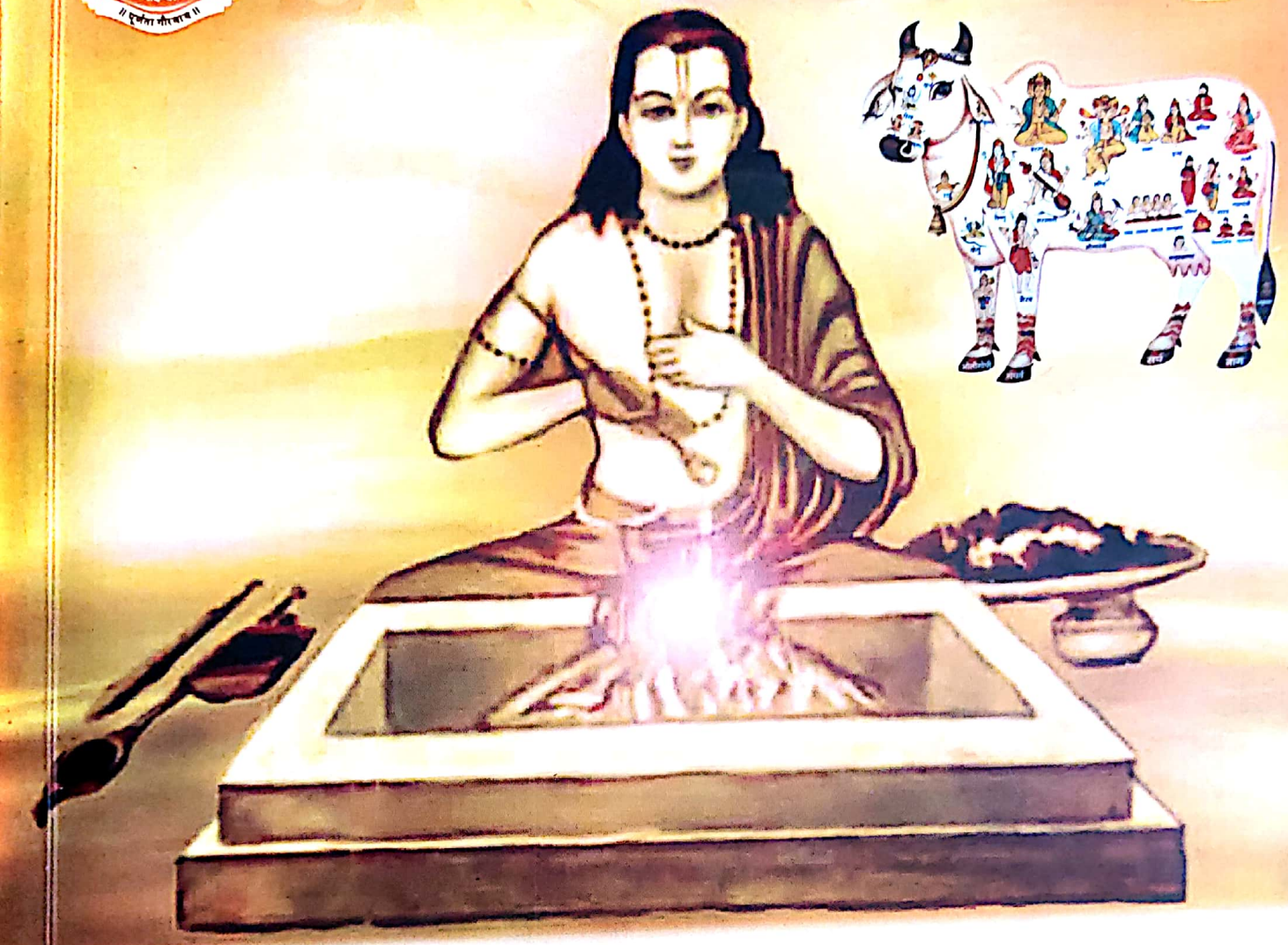

प्रधानसम्पादकः
प्रो. अर्कनाथचौधरी

सम्पादकः
डॉ. शत्रुघ्नपाणिग्राही

सहसम्पादकः
डॉ. अश्विन का. राजगोरः

Scanned with CamScanner

कर्मकाण्डसंस्कारविज्ञानम्

(महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानम्, श्रीसोमनाथसंस्कृतियुनिवर्सिटी, तथा सन्तश्री सन्ध्यागिरिबापुसंस्कृतवेदविद्यालयः, इत्येषां संयुक्ततत्त्वावधाने समायोजिता त्रिदिवसीया अखिलभारतीयवेदसङ्गोष्ठ्यां प्रस्तुतशोधपत्राणां संग्रहः)

आयोजकसंस्थाः

महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानम्,
श्रीसोमनाथसंस्कृतयुनिवर्सिटी, वेरावलम्
सन्तश्री सन्ध्यागिरिबापुसंस्कृतविद्यालयः

संरक्षकाः

पू. सन्तश्रीभगवद्गिरी बापु
प्रो. अर्कनाथचौधरी
प्रो. विरूपाक्षजडिपालः

प्रकाशकः

डॉ. महेन्द्रकुमार अं. दवे
कुलसचिवः
श्रीसोमनाथसंस्कृतयुनिवर्सिटी
राजेन्द्रभुवन रोड, वेरावलम्-३६२ २६६.

ISBN : 978-93-83097-23-4

प्रतिलिपयः - ५००
प्रकाशनवर्ष-२०१७
प्राप्तिस्थानम् - सन्तश्री सन्ध्यागिरिबापुसंस्कृतवेदविद्यालयः,
सामख्याली, कच्छ, गुजरातम् तथा
श्रीसोमनाथसंस्कृतयुनिवर्सिटी, राजेन्द्रभुवन रोड, वेरावलम्-३६२ २६६.

मुद्रणम्:

जलाराम ग्राफीक्स अेन्ड ओफ्सेट
परमहंस अेपार्टमेन्ट के पास, होटल कावेरी के पीछे,
अेस टी रोड, वेरावल - ३६२ २६६.
फोन : (०२८७६) २२१८६१

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

क्रमांक:	विषय:	नाम	पृष्ठ:
२८.	वैदिकवाङ्मय में गौ	डॉ. गिरिधारी पण्डा	८३-८४
२९.	अग्निहोत्रम्-एकं परिशीलनम्	डॉ. निरञ्जनमिश्र:	८५-८७
३०.	यज्ञादिकर्मणां ब्रह्मविचारे उपयोग:	डॉ. जानकीशरण: आचार्य:	८८-९१
३१.	दार्शनिकदृष्ट्या यज्ञस्वरूपम्	डॉ. वी. उमामहेश्वरी,	९२-९५
३२.	गो-माहात्म्यम्	डॉ. सङ्कल्पमिश्र:	९६-९९
३३.	वेदे आदर्शदाम्पत्यजीवनम्	डॉ. गिरीजाप्रसाद शङ्खी	१००-१०४
३४.	वेदे गोमहत्त्वम्	प्रा. डॉ. राजेन्द्रकुमार जे पण्ड्या	१०५-१०८
३५.	वेद शास्त्रो में गाय	डॉ. अमीषा एच. दवे	१०९-११०
३६.	वेदप्रणीतगृहस्थाश्रमसिद्धान्ता:	राजगोर रविशंङ्कर: कुम्भाभाइ	१११-११४
३७.	संस्कारेषु विज्ञानम्	व्यास पन्नालाल धर्मचन्द	११५-११७
३८.	अग्निहोत्र यज्ञ	श्रीविपुलजादव:	११८-१२१
३९.	समावर्तनसंस्कारस्य माहात्म्यम्	राजपरा मनिष:	१२२-१२४
४०.	श्राद्धतत्त्वम् – कालसर्वस्वोक्तदिशा	शुभश्री त्रिपाठी	१२५-१२९
४१.	अथर्ववेदे गो: विश्वरूपदर्शनम्	हार्दिक: डि कल्याणि	१३०-१३२
४२.	सन्ध्यावन्दनम्	श्री दुर्गाशरणरथ: (शोधच्छात्र:)	१३३-१३५
४३.	भारतीयसंस्कृतौ गोर्महत्त्वम्	डॉ. दुर्गाचरणषडङ्गो	१३६-१४१
४४.	अग्निहोत्रयाग:	डॉ. अश्विन का. राजगोर	१४२-१४४
४५.	गो-तत्त्वम्, तस्या: यागे योगदानम्, गोर्महत्वञ्च	डॉ. पङ्कजकुमार एस. रावल	१४५-१४९
४६.	शास्त्रपरम्परा में गो माता का विचार	डॉ. प्रशान्तकुमारपण्डा	१५०-१५२
४७.	वेदेषु गोतत्वविचार:	डॉ. ज्ञानरंजनपण्डा	१५३-१५७
४८.	आधुनिकसमाजे यज्ञानां प्रासङ्गिकता	डॉ. सोमनाथदाश:	१५८-१६१
४९.	वैदिक कर्म	पू. स्वामी स्वयंप्रकाशगिरि	१६२-१६३
५०.	अग्निहोत्रयागस्य वैशिष्ट्यम्	जोषी केवल:	१६४-१६५
५१.	Science behind Karmakand -	Prof. D.N.Pandeya	१६६-१७०
५२.	Ved is the Embodiments of Refinement	Shree Rajkishor Ojha	१७१-१७२

Scanned with CamScanner

अग्निहोत्र यज्ञ

श्री विपुल जादव

अग्निहोत्र शब्द अग्नि के आह्वान का वाचक है, यह अग्नि यज्ञाग्नि, द्यु लोकाग्नि, भौमाग्नि भेद से तीन प्रकारका है। यज्ञाग्नि में घृत का प्रक्षेप किया जाता है जिसके द्वारा वायु की शुद्धि होती है जल व आकाश में पवित्रता आती है। द्यु लोकाग्नि का कार्य रसों का लेना व देना है। सूर्य या चन्द्र जलों का आकर्षण करते हैं, तथा फिर उसके सहस्रधा दना कर पृथ्वी को ही प्रदान कर देते हैं। इस दिव्य गुण के कारण ही सूर्य, चन्द्र आदि देव कहाते हैं। देवों का कार्य परहित साधन है, यज्ञ शब्द का भी यही अर्थ है। यज्ञ के द्वारा देवताओं की पूजा की जाती है, पूजा का अर्थ रोली या चावल चढ़ाना ही नहीं किन्तु उस पदार्थ का सदुपयोग करना है, जल को मैला करना या जल में मल मूत्र का प्रक्षेप करना या विष आदि हानिकारक, दुर्गन्ध वसा आदि घृणास्पद वस्तुओं को जल में मिलाना जल की पूजा नहीं किंतु जल की निन्दा है, इसी प्रकार अग्नि में मल, विष्ठा, केश, नख आदि का जलाना और उसको अपवित्र करना अग्नि की पूजा नहीं किन्तु अग्नि की निन्दा है। भौमाग्नि के द्वारा यन्त्रों का चलाना, भोजन को पकाना, लोहे को मुलायम करना, पिघलाना, सुखाना, जलाना आदि कर्म किये जाते हैं, इन कर्मों को यथावत उपयोग लेना ही अग्नि की पूजा है। विपरीत उपयोग सब निन्दा है, जैसे आत्म-हत्या अपने शरीर को जल में डुबाना, जहरीली वस्तु खाना, अग्नि में फूँकना आदि क्रियाओं से की जा सकती हैं, तथा जो लोग ऐसा करते हैं वे आत्मघाती कहलाते हैं इसी प्रकार जो व्यक्ति आत्मा को बिना पहचाने इस लोक से प्रयाण करता है वह भी आत्मघाती कहते है। उपनिषद् में लिखा है कि- यो वा विदित्वाऽत्मानमस्माल्लोकात् प्रयाति स आत्मा कृपणः ।।

अर्थात्- जो व्यक्ति मनुष्य जन्म लेकर आत्मा पहिचानने का प्रयत्न नहीं करते वे आत्मघाती कहलाते हैं, दानमेकं कलौयुगे

अर्थात्- सुख या परमपद की प्राप्ति कलियुग में कए मात्र दान से ही हो सकती है, क्योंकि दान देने वाला अपने पापों को दान लेने वालों के प्रत्यर्पण कर देता। यही कारण है कि दान लेने वाले के बडे तपस्वी और तितिक्षु होना आवश्यक था। इन सब साधनों को त्रेताग्नि के नाम से भी पुकारते हैं, यह उक्त तीनों अग्नियों का सामुदायिक नाम है। यह महापद्धति बाह्य शुद्धि में परम उपयोगी है अतः शुद्धि के लिये जप की बडी आवश्यकता होती है अतएव गीता में कहा है। मानसिक या आध्यात्मिक पवित्रता के लिए मानसिक पवित्रता अनिवार्य है। केवल बाह्य शुद्धि, मानसिक शुद्धि नहीं हो सकती।

यह आदान प्रदान का लेन देन का सिलसिला चला ही आता है - इस परम्परा को उपस्थित रखने में यह यज्ञ परम सहायक है अतएव अग्निहोत्र करना ही चाहिये यह शास्त्रकारों का मत है, यह यज्ञ, देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, भूत यज्ञ आदि भेद से पाँच प्रकार का है- जिसके न करने से मनुष्य के प्रत्यवाय या पाप का भागी होता है।

इस महत्त्वपूर्ण यज्ञ कार्य के भेद उपभेदों की इयन्ता करना साधारण कार्य नहीं है। गीता के चतुर्थाध्याय के यज्ञनिरूपण प्रकरण में यज्ञ के १५ मुख्य भेद बतलाए हुए हैं। यदि इनकी विभिन्न शाखाओं की गणना की जाय तो यज्ञक्षेत्र को अनन्त कह कर ही विश्राम करना पडेगा। अतएव हम इन भेदों की ओर न जाकर यज्ञकर्म में यज्ञ के प्रकार अग्निहोत्र विधि, महत्व और लाभ और उसके विद्वानों की परम्परा की ओर ही ध्यान देकर कुछ उपयोगी विचार उपस्थित करते हैं।

Scanned with CamScanner

महर्षि वेदव्यास की उत्कृष्ट रचना श्रीमद्भागवत् भगवान् के श्रीमुख का- वैदिकस्तान्त्रिको मिश्र इति मे त्रिविधो मखः ।। ११/२७/७

यह वचन है इसके अनुसार सामान्यतया वैदिक, तान्त्रिक और मिश्र ये तीन यज्ञानुष्ठान की शैलियाँ ज्ञात होती है। यहाँ तान्त्रिक और मिश्र शब्द की व्याख्या में विचारकों के विभिन्न मत दीख पडते हैं। कुछ लोग तान्त्रिक शब्द से तन्त्र दर्शन प्रतिपादित योग आदि क्रियाओं का, तथा कई विचारक दक्षिण और वाममार्ग नाम से प्रसिद्ध तन्त्र पद्धति के कर्मों का निर्देश बताते हैं।

श्रुति अर्थात् वेद के मन्त्र और ब्राह्मण नाम के दो अंश हैं। इन दोनों में या दोनों में से किसी एक में सांगोपांग स्मृति से वर्णित यज्ञों को श्रौतयज्ञ कहते हैं। श्रौत कल्प में यज्ञ और होम दो शब्द हैं। जिसमें खडे होकर वषट् शब्द के द्वारा आहुति दी जाती है और याज्या पुरोनुवाक्या नाम के मन्त्र पढे जाते हैं। वह कार्य यज्ञ माना जाता है जिसमें बैठकर स्वाहा शब्द के द्वारा आहुति दी जाती है वह होम कहा जाता है। श्रौतयज्ञ- इष्टियाग, पशुयाग और सोमयाग इन नामों से मुख्यतया तीन भागों में विभक्त है। श्रौतयज्ञों के विधान की एक स्वतन्त्र परम्परा है उस प्रयोग परम्परा का जिस कार्य में पूर्णतया उल्लेख हो उसे प्रकृतियाग कहते हैं। और जिस कार्य में विशेष बातों का उल्लेख और शेष बातें प्रकृतियाग से जानी जायँ उसे विकृतियाग कहते हैं। अत: एवं श्रौतयज्ञों के तीन मुख्य भेदों में क्रमश: दर्शपूर्णमासिष्टि, अग्नीषोमीय पशुयाग, और ज्योतिष्टोम सोमयाग ये प्रकृतियाग हैं।

श्रौतयज्ञ०-०आहवनीय, गार्ह्यपत्य, दक्षिणाग्नि इन तीन अग्नियों में होते हैं इसलिए इन्हें त्रेताग्नि यज्ञ भी कहते हैं। प्राय: सभी श्रौतयज्ञों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष ढंग से, कम या अधिक रूप से तीनों ही वेदों के मन्त्रों का उच्चारण होता है अत: श्रौतयज्ञ त्रयी साध्य हैं।

इन श्रौतयज्ञों का प्रचार आजकल भारतवर्ष में नहीं के बराबर है। क्योंकि आजकल का मानव बहुमुखी और बहुधन्धी है। उसे कोई शास्त्रीय बन्धन पसन्द नहीं है। श्रौतयाग करने का वही अधिकारी है जिसने विधिपूर्वक श्रौत अग्नियों का आधान लिया है और प्रतिदिन सायं प्रात: अग्निहोत्र में श्रद्धापूर्वक विधानुकूल समय लगाता है। श्रौताग्निहोत्री को अग्नि की निरन्तर रक्षा करनी पडती है।

अग्निहोत्र विधि

ठीक स्थानीय सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय, गाय के घी की कुछ बुंदों से सने दो चुटकी कच्चे चावल (अक्षत) अग्नि में डाले जाते हैं। तांबे के एक अर्ध पिरामिड आकार के पात्र में अग्नि प्रज्वलित की जाती है। अग्नि में दो बार आहुति डालते समय, दो सरल वेद मंत्रों का उच्चारण किया जाता है।

अग्निहोत्र की सामग्री को अग्नि में आगे दिए गए मंत्रोच्चारण के साथ आहुति दी जाती है।

सूर्योदय के समय

१. सूर्याय स्वाहा सूर्याय इदम् नं मम

२. प्रजापतये स्वाहा प्रजापतये इदम् न मम

सूर्यास्त के समय:

१. अग्नये स्वाहा अग्नये इदम् न मम

२. प्रजापतये स्वाहा प्रजापतये इदम् न मम

Scanned with CamScanner

मंत्र के उच्चारण से व्यक्ति के मन में शरणागत भाव की निर्मिति तथा जागृति में सहायता होती है । मंत्र का उच्चारण इस प्रकार करें कि वह पूरे घर में गुंजायमान हो। उच्चारण स्पष्ट तथा लय में होना चाहिए । मंत्र में आए शब्द सूर्य, अग्नि तथा प्रजापति सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पर्यायवाची हैं । शरणागत भाव की जागृति इन मंत्रों के उच्चारण से होती है ।

* अग्नि प्रज्वलित करना

* अग्निहोत्र के लिए आवश्यक सामग्री

चुटकी अखंड अक्षत, गाय का घी, निश्चित माप का अर्थ पिरामिड के आकार का तामपात्र, गाय के गोबर के उपले

और अग्नि का स्रोत (दियासलाई)

* आहुति देना

*प्रात:कालीन अग्निहोत्र

* संध्याकालीन अग्निहोत्र

* अग्निहोत्र के स्नान को स्वच्छ तथा व्यवस्थित रखें ।

* अग्निहोत्र यज्ञ स्थान

अग्निहोत्र घर के किसी भी कक्ष अथवा स्थान में किया जा सकता है । यदि घर में पूजाघर अथवा ध्यानकक्ष हो तो वहां अग्निहोत्र करना सर्वोत्तम होगा । यह आपके घर के छज्जा अथवा छत, अथवा घर से लगे खेत अथवा वाटिका में भी किया जा सकता है ।

* अग्निहोत्र यज्ञ कौन कर सकता है ।

अग्निहोत्र संस्कार सरल, सहजता से ग्रहण करने योग्य तथा सर्वगत है । यह कोई भी कर सकता है । संसार में, अनेक लोग तथा परिवार इस हवन को करके लाभान्वित हो रहे हैं । यह धर्म, संप्रदाय, जाति, राष्ट्रीयता, रंग, लिंग तथा आयु का कोई भी बंदन नहीं है । बच्चे भी बडों के मार्गदर्शन में इसे कर सकते हैं । स्त्रियां अपने मासिक धर्म के समय इसे न करें ।

अग्निहोत्र करते समय केवल एक ही व्यक्ति हवन करे । अग्निहोत्र के समय परिवार के अन्य लोग उपस्थित होकर होनेवाले भाग को ग्रहण करें ।

अग्निहोत्र के उपरांत अग्नि को स्वयं से बुझने दें । उसे बुझाने के लिए अन्य कुछ भी न करें । उपले के टुकडे का पूर्णत: जलना सर्वोत्तम होगा । यदि वे पूरा नहीं जलते तो उन्हें विभूति के रूप में (जल में विसर्जन कर आदि) उपयोग करें और अगली बार अन्य उपले का प्रयोग करें ।

अग्निहोत्र के फायदे

जब आप अग्निहोत्र जीवन पद्धति को नित्य अपने आचरण में उतारते है तो अग्निहोत्र से अनेको अनेक फायदे मिलते है ! अग्निहोत्र के कुछ तो ऐसे भी लाभ है जिन्हे आप नित्य अपने रोजमर्रा की व्यस्ततम जिंदगी में महसूस भी नही कर पाते है । जब सवाल उठता है कि क्या अग्निहोत्र के फायदे है जवाब है कि अग्निहोत्र के अनगिनत फायदे है ।

Scanned with CamScanner

अग्निहोत्र का सबसे बडा लाभ है कि अग्निहोत्र करने से हमारी दिनचर्या में सुधार होता है । दिनचर्या का सीधा संबंध हमारी शरीर की जैविक घडी से होता है । जब हम देरी से उठते है तो हमारी जैविक घडी उसी अनुसार कार्य करती है यानि गलत ढंग से चलती है यानि जब हम सही समय पर उठते है तो हमारी जैविक घडी सही समय से कार्य करती है जिससे हमारे सारे शरीर के अंग सुचारु रूप से कार्य करते है जिसके कारण हम प्रफुल्लता, आनंद और खुशी का अहसास करते है ।

अग्निहोत्र का दूसरा सकारात्मक प्रभाव हमारे बच्चों पर होता है । अग्निहोत्र का वातावरण बच्चों में अधिक एकाग्रता, आपसी सहयोग, प्रेम, उत्तम स्वास्थ्य देता है । अग्निहोत्र हमारे घर में शांति का वातावरण लाता है और घर के नन्हे मुन्नो को एक सकारात्मक वातावरण में ढालता है जिससे वे आज्ञाकारी बनते है, संस्कारवान बनते है ।

अग्निहोत्र से निकली प्राणवायु हमारे तंत्रिका तंत्र, हृदय आदि पर विषेश प्रभाव डालती है, इन्हें शान्तिप्रदान करती है । मास्तिष्क की कोशिकाओं का पुन:निर्माण होता है और रक्त शुद्ध होता है ।

अग्निहोत्र का दूसरा सकारात्मक प्रभाव हमारे बच्चों पर होता है । अग्निहोत्र का वातावरण बच्चों में अधिक एकाग्रता, आपसी सहयोग, प्रेम, उत्तम स्वास्थ्य देता है । अग्निहोत्र से निकली प्राणवायु हमारे तंत्रिका तंत्र, हृदय आदि पर विषेश प्रभाव डालती है । मस्तिष्क की कोशिकाओं का पुन:निर्माण होता है और रक्त शुद्ध होता है । अगर किसान अग्निहोत्र की भष्म को खेत में डालता है और नित्य अग्निहोत्र करता है तो वह बिना जहरीली, शुद्ध, अधिक स्वादिष्ट फसल का उत्पादन करता है जो कि किसी भी अन्य फसल से लाखों गुना अधिक फायदेमन्द होती है । अग्निहोत्र में नशामुक्ति होती है । नियमित अग्निहोत्र से और उनके शुद्धि कारक प्रभाव से किसी भी प्रकार का नशा कुछ दीनों, महिनो या वर्षो में पूरी तरह छुट जाता है । प्रयोगों द्वारा देखा गया है कि एक समय के अग्निहोत्र से ९४.५ हानिकारक बैक्टेरिया निष्प्रभावी होते है । अग्निहोत्र से निकलने वाली फार्मलडिहाईड आदि गैसे हानिकारक बैक्टेरीया को पनपने ही नही देती ।

अग्निहोत्र करने से सृष्टि तत्वों को जीवन प्राप्त होता है । वृी, वनस्पति, फल और फुलो में सुगन्ध का प्रसार होता है जैसे वृक्ष की जड में जल सींचने से समस्त वृक्ष हरा भरा, पल्लवित, पुष्पित, फलित होता है एवं वृद्धि को प्राप्त होता है ।

निष्कर्ष यह है कि अग्निहोत्र केवल प्रदूषण से ही हमे मुक्ति नही देता है बल्कि ऐसा देखा गया है को असाध्य रोग भी नियमित अग्निहोत्र करने और अग्निहोत्र की भस्म का नियमित सेवन करने से दूर होते हैं । अग्निहोत्र करने से आक्सीजन का स्तर घटता है यह एक भ्रम है । यज्ञ करने से कई गुना आक्सीजन बढ जाती है ।

शोधछात्र:,

श्रीसोमनाथसंस्कृतविश्वविद्यालय, वेरावल, गुजरात

Scanned with CamScanner

संस्थाया: परिचय:

श्री गिरनारी एज्युकेशन एन्ड चेरीटेबल ट्रस्ट संचालित संतश्रीसंध्यागिरिबापू संस्कृत- वेद-विद्यालयस्य प्रारंभ: दिनांक :-१/७/२००३ तमेवर्षे उटजमध्ये पंच ऋषिकुमारै:-अभवत् । कालक्रमेण एषा संस्था उत्तरोत्तर विकासोन्मुखी भूत्वा वटवृक्ष समा जाता । अस्माकं संस्था ऋषिकुमाराणां कृते आवासनिवासभोजनादिकं नि:शुल्कं सेवां दत्वा वेद-वेदाङ्ग-पुराणशास्त्रादिकं पाठयति । अत्र अधुना शतऋषिकुमारा: निवसन्ति एवञ्च अस्माकं प्राण भूतानां षड्शतं धेनूनाम् अपि सम्यक् प्रकारेण पालनं पूज्यपादै: भगवतिगिरिबापू महोदयै: विस्वस्तमण्डलै: क्रियते ।

संतश्रीसंध्यागिरिबापू-संस्कृत-वेद-विद्यालय, सामखीयाली

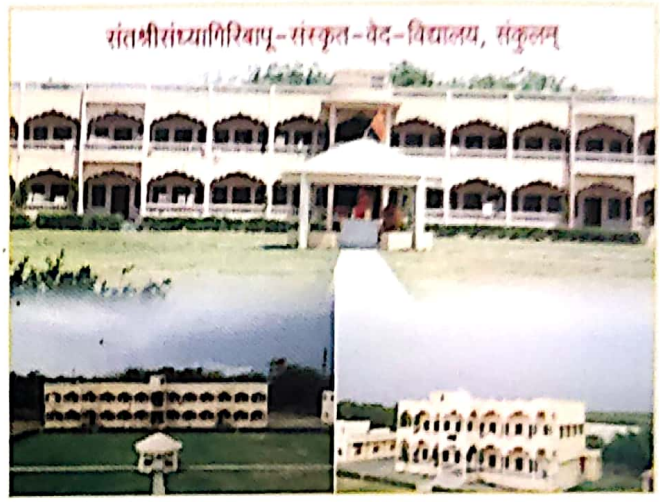
संतश्रीसंध्यागिरिबापू-संस्कृत-वेद-विद्यालय, संकुलम्

पारदेश्वर महादेव

संतश्रीसंध्यागिरिबापू-गौशाला, सामखीयाली

संतश्रीसंध्यागिरिबापू-भोजनालयम्

संतश्रीसंध्यागिरिबापू-संस्कृत-वेद-विद्यालय-ऋषिकुमारै सह गुरुजना

संतश्रीसंध्यागिरिबापू-यज्ञशाला

॥ प्रणीतिरस्तु सूनृता ॥

Scanned with CamScanner